आपातकाल में सृजन फुलवारी

रेखा ताम्रकार 'राज'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

रेखा ताम्रकार 'राज'

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-205-0

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020,

मूल्य - 50.00 रूपये रेखा ताम्रकार 'राज'

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY REKHA TAMRKAR 'RAJ'

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	माँ शारदे	6
2.	जीवन बगिया	7
3.	पूजा	8
4.	प्रभु का हाथ	9
5.	आ चलें आसमान तक	10
6.	दिल उदास है	11
7.	जी चाहता है	12
8.	दिल होता बेहाल	13
9.	गुमनामी	14
10.	सुख-दुख आते-जाते	15
11.	मिट्टी के खिलौने	16
12.	मध्यप्रदेश हमारा	17
13.	हरषत हम सब	18
14.	है! राम	19
15.	कन्हैया	20
16.	धैर्य	21

माँ शारदे

वीणा वादिनी हे माँ वादिनी
हंस वाहिनी हे माँ हंस वाहिनी

ज्ञान हमें दो, ध्यान हमें दो
बुद्धी का वरदान हमें दो
जीवन पथ पर कभी न हारे
जीने का स्वाभिमान हमें दो
वीणा वादिनी हे माँ वादिनी
हंस वाहिनी हे माँ हंस वाहिनी

तुम चाहो तो हम बोले
ना चाहो तो ना बोले
अपनी तीखी वाणी में
मिश्री की डिल्ली घोले
वीणा वादिनी हे माँ वादिनी
हंस वाहिनी हे माँ हंस वाहिनी

वाल्मीक मीरा, कबीर को
तुलसी दास नानक सूर को
बुद्धि प्रखर कर ज्ञानी बनाई
तेरी शरण है तारो 'राज' को
वीणा वादिनी हे माँ वादिनी
हंस वाहिनी हे माँ हंस वाहिनी

जीवन बगिया

सूनी थी जीवन बगिया तुम मिले गुलजार हुई
झर गये सब सूखे पत्ते जिंदगी मेरी बहार हुई

जिंदगानी का वो दिन
बड़ा ही सुहावना रहा
सात फैरे सात वचन ले
साजन मेरा अपना हुआ
बिंदिया पायल पहनके मैं नख-शिख से श्रृंगार हुई
झर गये सब सूखे पत्ते जिंदगी मेरी बहार हुई

दामन खुशी से भर दिया
सदा रहे सुख दुख में साथ
पल भर को भी नही छोड़ा
चलते रहे ले हाथों मे हाथ
जीवन नैया का तू खेवनहार मैं तेरी पतवार हुई
झर गये सब सूखे पत्ते जिंदगी मेरी बहार हुई

सादा सरल सहज व्यक्तित्व
होठों पे खिली सदा मुस्कान
नहीं किसी का दिल दुखाते
छोटे बड़ों का करते सम्मान
धन्य हूई पाकर तुमको तुम प्रीत हुए मैं प्यार हुई
झर गये सब सूखे पत्ते जिंदगी मेरी बहार हुई

पूजा

एक धर्म एक जात से अनुबंध जो सदा होता
मानव यूँ टुकड़े, टुकड़े, टुकड़े में न बटा होता

जैसे एक सूरज..... चंदा
एक ही ये....धरती माता
वैसे ही एक ईश्वर होता
हर मन उसके गुण गाता
राम रहीम यीशु नानक का घर नहीं जुदा होता
मानव यूँ टुकड़े, टुकड़े, टुकड़े में न बटा होता

कोई बड़ा न कोई छोटा
कोई खरा न कोई खोटा
सबके लिये ही सब जीते
छूत-अछूत न कुछ होता
समरसता और प्रेमभाव हर दिल में भरा होता
मानव यूँ टुकड़े, टुकड़े, टुकड़े में न बटा होता

मेहनत की वो रोटी खाता
जितना करता उतना पाता
आरक्षण के दम पर कोई
नहीं किसी का हक चुराता
कर्म को देवता मान कर्म की पूजा किया होता
मानव यूँ टुकड़े, टुकड़े, टुकड़े में न बटा होता

प्रभु का हाथ

1

जो जीवन में माँ साथ रहे।
सिर जैसे प्रभु का हाथ रहे।
दुख मेरे वो ही सदा हरे।
सुख झोली मेरी वही भरे।

2

ना जाना मुझ से दूर कभी।
ना देना आँखों में अश्रु कभी।
बस विनती तुझसे करूँ यही।
बन मेरी सखिया रहो यहीं।

3

है सूना तेरे बिना जहां।
बिन तेरे मेरा कौन यहाँ।
आ अपने आँचल छुपा मुझे।
बद नजरों से ले बचा मुझे।

4

यह दुनिया बेटा मोह पड़ी।
है सबको उसकी चाह बड़ी।
मैं बेटी तेरी मान सदा।
रख सुखदुख का तू ध्यान सदा।

5

मैं कोई ऐसा काम करूँ।
ये जीवन तेरे नाम करूँ।
बन तेरी छाया सदा चलूँ।
तज दुनिया तेरे साथ रहूँ।

आ चलें आसमान तक

नदियों की कलकल से, पंछियों की उड़ान तक
छोड़ कर सारा जहान, आ चलें आसमान तक

झूम कर दो दिल मिलें
प्रीत भरे घर-आँगन में
मद्मस्त रंगों की होली हो
फागुन रुत मन-भावन में
फूल बन कलि खिली महक उठी मन के बगान तक
छोड़ कर सारा जहान, आ चलें आसमान तक

खुशियाँ दामन में भर के
उड़ते पवन के संग खेलें
ना मन हारे, ना तन थके
आगे बढ़कर गगन छू लें
इक-दूजे के साथ रहें, सांझ से विहान तक
छोड़ कर सारा जहान, आ चलें आसमान तक

जब तक हो दम में दम
प्रेम गीत गाते जायें हम
खुशी मिले या गम मिलें
हरदम मुस्काते जायें हम
जिंदगी की दास्तां लिखें, आँसू से मुस्कान तक
छोड़ कर सारा जहान, आ चलें आसमान तक

दिल उदास है

मुख में फैला उजास है
और यह दिल उदास है

नथ बेंदी झुमके कंगना
बिन उसके सूना अँगना
आ जाता इक बार यहाँ
वो देती जो मांगे सजना
ड्योढी बैठ तकुँ सूनी राहें
पिय मिलन की आश है और यह दिल उदास है

चाँद देख हंसी उड़ा रहा
आईना भी है चिढ़ा रहा
खुशियों को तरसे मन
बदरा गम बरसा रहा
जिंदगी यूँ बन गई जोगन
कोई अपना नही पास है और यह दिल उदास है

स्वप्न भरे उस्नींदे नैन
पलभर नहीं पायें चैन
उनकी यादों के दीपक
टिमटिमाते है सारी रैन
जाने कब वो हों समक्ष
होठों पर ठहरा काश है और यह दिल उदास है

जी चाहता है

जी चाहता है
वक्त के
पन्नों को जोड़
एक किताब बना लूँ
निचौड़ लाऊँ
इंद्र धनुष से
रंगीन स्याही
उम्मीदों की
दवात में
उसे भराऊँ
हवा के पर की
कलम बना कर
मान-मनुहार के
अक्षर-अक्षर चुन
धर्म-जात से परे
समरसता भरे
शब्दों की नई इक
इबारत बनाऊँ
पढ़ कर जिसे
मानवता जागे
मैं वो कलम
दवात स्याही पाऊँ
लिखती जाऊँ
और बस लिखती ही जाऊँ।

दिल होता बेहाल

रेल पटरी का यह फेला जाल
देख-देख के दिल होता बेहाल

थमी रहे या बढ़ जाये
सीधे चले या मुड़ जाये
किसी एक के साथ रहे
या दूजे से जुड़ जाये
हर शहर गांव में बिछी जिसमें
लौहपथ गामिनी करती धमाल
देख-देख के दिल होता बेहाल

एक लक्ष्य, एक लगन हो
मंजिल पाने का जतन हो
छोटे-बड़े हों या नर-नारी
जो सफर में वो मगन हो
दौड़े-रुके सीटी से सचेत करे
औढ़े रहती अनुशासन की ढाल
देख-देख के दिल होता बेहाल

पटरी के जाल सा जीवन
सुख-दुख में भरमाया जीवन
अडिग रहे अपने उद्देश्य में
जीता सदा न हारा जीवन
मानवता फलित रहे दिल में
नहीं रहेगा फिर कोई मलाल
देख-देख के दिल होता बेहाल

गुमनामी

नाम धन इज्जत शोहरत सब कुछ पाना चाहूँ मैं
गुमनामी के अंधेरों में क्षण भर न रहना चाहूँ मैं

उम्मीदों के हिंडोले
आशाओं की डोरी
सपनों की पेंगे
ले चली चोरी-चोरी
अरमानों की पतंग बनूँ, आकाश छूना चाहूँ मैं
गुमनामी के अंधेरों में क्षण भर न रहना चाहूँ मैं

मेरे रूप को सजाते
लाली सिंदूर टीका
मेंहदी महावरी रंग
मन को लागे नीका
बिंदिया झुमके हरवा चूड़ी पहन सजना चाहूँ मैं
गुमनामी के अंधेरों में क्षण भर न रहना चाहूँ मैं

प्रीत की दौलत मिली
सारी उमर सहेज रखूँ
छोड़ के सारी दुनिया
साजन की देहरी में रहूँ

सजन संग जीना, सजन संग मर जाना चाहूँ मैं
गुमनामी के अंधेरों में क्षण भर न रहना चाहूँ मैं।

सुख-दुख आते-जाते

सुख-दुख आते-जाते
हंसते और रुलाते
सुख में जो दिल खिले
दुख में न हारिये।1।

जो मिले जितना मिले
चाहे कम ज्यादा मिले
मन में संतोष रखे
बात मेरी मानिये ।2।

जब दुख नही होता
सुख का न जश्न होता
एक सुर एक ताल
मजा नहीं जानिये।3।

बार-बार नहीं मिले
जीवन इक बार मिले
जिंदगी का हर पल
खुश हो गुजारिये।4।

मिट्टी के खिलौने

बन गये है सारे खिलौने
अब रंग भरना बाकी है
दुकान लगा समान सजा
हाट में बैठना बाकी है

अभी कुछ दिन पहले ही
खदनिया से मिट्टी लाये थे
कूटपीट कर बराबर किया
पानी डालडाल मिलाये थे
हो गई तैयार माट्टी बस
नव आकार देना बाकी है
दुकान लगा समान सजा

शेर-हाथी राजा-रानी नही
कप-प्लेट, लोटा-थाली दिये
घरघूले का है सारा समान
नन्हीं बिटिया रानी के लिये
सज-संवर कर आयगी वो
बस घर सजाना बाकी है
दुकान लगा समान सजा

मोबाइल कंप्यूटर में खेलें
बच्चे खिलौने खेलते नहीं
खरीदें सब मंहगे खिलौने
ये खिलौने खरीदते नही
यही हमारी रोजी उनको
याद दिलाना बाकी है
दुकान लगा समान सजा

मध्यप्रदेश हमारा

सुंदर सुगढ़ प्यारा
मध्य प्रदेश हमारा
न कोई कमी न खोट
घूमने तो आइए ।1।

तीर्थ अमरकंटक
माँ रेवा की कलकल
उज्जैन महाकाल में
पुण्य फल पाइए ।2।

बांध्वगढ़ कांहा पेंच
हिरण साभंर शेर
खजुराहो पंचमढ़ी
सांची देख आइए ।3।

मैंगनीज तांबा हीरा
सागौन शीशम हर्रा
प्रचूर वन-संपदा
जहाँ-तहाँ पाइए ।4।

हरषत हम सब

चमक-चमक कर
लपट-झपट कर
चपल चलत जब
चमकत जग सब।1।

घड़क-घड़क कर
धमक-धमक कर
उमड़-उमड़ घन
डरत भगत सब।2।

छम -छम-छम कर
झम-झम-झम कर
बरसत रह जल
त मगन भए सब।3।

गगन बरस रह
पवन चलत रह
सजन हरष तब
हरषत हम सब।4।

हे! राम

पाप, अधर्म की दलदल से
छलझूठ फरैब की माया से
विपदा बरसाते आकाश से
घोर अंधेरी काली छाया से

क्या कभी कोई राम आयेंगे
सत्य प्रेम का धनुष उठायेंगे
समरसता भर जाये जग में
ऐसा मानवता तीर चलायेंगे

क्या दानव कभी हारेगा
छोड़ कर धरा को भागेगा
चहुँ ओर हों खुशियाँ सारी
क्या दिन ऐसा भी आयेगा

न कोई गरीब, दलित होगा
कष्ट पीड़ा से पीड़ित होगा
सभी जियें निर्भय हो कर
हर एक हृदय मुदित होगा

हे राम इक बार और आओ
संग में धनुष बाण लाओ
भटके हुए हम प्राणियों को
मर्यादा का पाठ पढ़ा जाओ

कन्हैया

लो फिर से याद आ गई कन्हैया तुम्हारी
प्यारी-प्यारी मनभावन सुरतिया तुम्हारी

घूंघर वाले बालों की मोर पंखी
कांधे का दुपट्टा..... पीत रंगी
कानों के कुंडल गले का हरवा
आती-जाती सांसों की सारंगी
याद आई मधुर-मधुर मुस्कनिया तुम्हारी
प्यारी-प्यारी मनभावन सुरतिया तुम्हारी

मतवाले नयनों की चितवन
माथे का टीका कुमकुम चंदन
हाथ की लकुटी और कामरिया
पांवों की पैजनिया छनछनछन
याद आई रुनझुन गाती मुरलिया तुम्हारी
प्यारी-प्यारी मनभावन सुरतिया तुम्हारी

ग्वाल-वाल और सखी सहेली
जमुना की लहरें, राधा हठेली
कदम की छैंया, मधुवन बारो
लगे शरद पूनम की रात पहेली
याद आई वृंदावन में रास रचैया तुम्हारी
प्यारी-प्यारी मनभावन सुरतिया तुम्हारी

धैर्य

तेज झलकता हो आँखों में
दिल में जोश होना चाहिए
जो बेटी है भारत माता की
उसे धैर्य नहीं खोना चाहिए

किया त्याग सीता राधा ने
और अनोखा संदेश दिया
कृष्ण की दिवानी मीरा ने
प्रेम में सबकुछ भुला दिया

रानी अवंति लक्ष्मी बाई ने
अंग्रेजों से लोहा लिया था
रानी पद्मिनी दुर्गावती ने
मुगलों को धूल चटाया था

ममता की मूर्ति मदर टेरेसा
लतामंगेशकर सुरकोकिला
पुलिसअधिकारी किरणवेदी
गगनगामी कल्पना चावला

सदियों से ही इन बेटियों ने
सब्र धीरज से काम किया
फर्ज...कर्तव्य की राह पर
तन-मन अपना वार दिया

तू भी है भारत की बेटी
जुल्मों से कभी डरना नहीं
साहस कर सामना करना
झुकना नहीं तू थमना नहीं

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

रेखा ताम्रकार 'राज'

हनुमान जी वार्ड
महाराजपुर जिला मंडला म.प्र.

Email- rajtamrakar14@gmail.com
Mobile - 7999226530

भारत ही क्या पूरे विश्व में महामारी का प्रकोप छाया हुआ है। पूरे देश में लॉकडाउन लगा हुआ है मतलब कहीं भी आना-जाना बंद लोग घर में रहें और सुरक्षित रहें। ऐसी स्थिति में प्रत्येक व्यक्ति बच्चे-बूढ़े, महिला-पुरुष सभी अपने घर में कैद है। लोगों के पास खाने-पीने व हल्का-फुल्का मनोरंजन के अलावा कोई काम नहीं। किसी को सूझ भी नहीं रहा कि वो क्या करें क्या न करें। लेकिन इन्हीं आपातकालीन दिनों में अंतरा शब्दक्ति साहित्यिक ग्रुप में गद्य-पद्य दोनों ही विधा पर एक से बढ़कर एक विषय प्रदान कर हम लेखकों को अविरल लेखन हेतु प्रेरित किया जाता रहा है। उस पर प्रीति जी के द्वारा निरंतर अथक परिश्रम कर विषयवार सांझा संकलन ई-बुक का प्रकाशन प्रशंसनीय हैं। यही कारण है कि अंतरा शब्दशक्ति की सक्रियता सतत बनी हूई है।

मातारानी से विनती है साहित्य के आकाश में अंतरा-शब्शक्ति का नाम सदियों-सदियों तक चमकता रहे।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com

978-93-5372-205-0

मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स

Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/